दुदोह गां स यज्ञाय शस्याय मघवा दिवम् ।

सम्पद्विनिमयेनोभौ दधतुर्भुवनद्वयम् ।।26।।

अन्वय स यज्ञाय गां दुदोह, स मघवा शस्याय दिवं दुदोह, उभौ सम्पद्विनिमयेन भुनवद्वयं दधतुः।

अनुवाद वह (राजा दिलीप) यज्ञ करने के लिए पृथ्वी को दुहते थे (खनिजों, सुवर्ण, रत्नादि का खनन करते थे) और इन्द्र अन्न के लिए स्वर्ग को दुहता था (अन्न की वृद्धि के लिए आकाश से पृथ्वी पर जल की वर्षा करता था। इस प्रकार (दिलीप और इन्द्र) दोनों परस्पर सम्पत्ति का आदान-प्रदान करके (दिलीप खनिजों का खनन करके तथा प्रजा से कर लेकर इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ करके और इन्द्र यज्ञ में प्रसन्न होकर दिलीप की पृथ्वी को अन्न से भरपूर करने के लिए समय पर वर्षा करके) दोनों लोकों का पालन करते थे।

टिप्पणियां

भारत के प्राचीन चिन्तक ऋषि मानते थे कि पृथ्वीलोक (भूलोक) और स्वर्गलोक एक-दूसरे पर अवलम्बित हैं। भूलोक के निवासी वर्षा के लिए द्युलोक-निवासी देवताओं पर अवलम्बित रहते हैं और स्वर्ग के वासी देवता अपना भोजन हविष्य प्राप्त करने के लिए पृथ्वीलोक के मनुष्यों पर आश्रित रहते हैं। यह विचार श्रीमद्भगवद्गीता में भी इस प्रकार व्यक्त किया गया है:

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ। (गीता 3/11)

यज्ञाय यष्टुं, यज् नङ् तुमुन् के अर्थ में चतुर्थी। मल्लिनाथ के अनुसार ''क्रियार्थोपपदस्य च'' से चतुर्थी।

गाम् दुदोह उसने गौ (पृथ्वी) को दुहा ('कर' लिया अथवा धातु, रत्नादिकों का उत्खनन करवाया)। राजा दिलीप यज्ञ के लिए (अपने सुख के लिए नहीं) पृथ्वी से (लोगों से) 'कर' लेते थे ताकि 'कर' से प्राप्त धन से वे यज्ञ कर सकें और उससे देवता प्रसन्न होकर समय पर वर्षा करें और उससे राज्य में पर्याप्त अन्न हो और प्रजा सुखी रहे।

देखिए, ''यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।'' (गीता 3/9)।

मघवा इन्द्र।

शस्याय दिवम् पृथ्वी पर अन्न उत्पन्न हो, इस उद्देश्य से इन्द्र स्वर्ग को दुहता था अर्थात् समय पर वर्षा करता था। मल्लिनाथ के अनुसार **'क्रियार्थोपपदस्य''** से चतुर्थी। **'पर्जन्यादन्नसम्भवः।''** (गीता / 14)

सम्पद् सम्पत्ति का आदान-प्रदान करते हुए दिलीप और इन्द्र पृथ्वीलोक और स्वर्गलोक का भरण-पोषण करते थे। राजा दिलीप स्वर्ग के देवताओं के लिए हवि अर्पण करते थे और इन्द्र बदले में दिलीप की प्रजा के लिए पृथ्वी पर जल की वर्षा करते थे। इस प्रकार दोनों परस्पर सम्पत्ति का आदान-प्रदान करते थे। दण्डनीति में कहा गया है:

राजा त्वर्थान् समाहृत्य कुर्यादिन्द्रमहोत्सवम्।

प्रीणितो मेघवाहस्तु महतीं वृष्टिमावहेत्।।

सम्पद्विनिमियेन सम्पदः विनिमयेन (षष्ठी तत्पुरुष) सम्पद्विनिमयेन। सम्पदा के विनिमय से।

तौ दधतुः वे दोनों भूलोक और द्युलोक को धारण करते थे। पालन करते थे। इसी प्रकार का विचार अभिज्ञान-शाकुन्तलम् में अभिव्यक्त हुआ है:

तव भवतु विडौजाः प्राज्यवृष्टिः प्रजासु, त्वमपि विततयज्ञः स्वर्गिणः प्रीणयस्व।

युगशतपरिवर्तावनेवमन्योन्यकृत्यैः नयतमुभयलोकानुग्रह श्लाघनीयैः।।